

बाल महाभारत
कक्षा-7 विषय-हिंदी
पाठ- 24 विराट का भ्रम

(घनश्याम मीना)





राजा यह सुनकर एकदम चौंक उठे। उनके विशेष पूछने पर स्त्रियों ने कौरवों के आक्रमण आदि का सारा हाल सुनाया। यह सब सुनकर राजा का मन चिंतित हो उठा।

राजा को इस प्रकार शोकातुर होते देखकर कंक ने उन्हें दिलासा देते हुए कहा—“आप राजकुमार की चिंता न करें। बृहन्नला सारथी बनकर उनके साथ गई हुई है।”





त्रिगर्त-राजा सुशर्मा पर विजय प्राप्त करके राजा विराट नगर में वापस आए, तो पुरवासियों ने उनका धूमधाम से स्वागत किया। अंतःपुर में राजकुमार उत्तर को न पाकर राजा ने पूछताछ की तो स्त्रियों ने बड़े उत्साह के साथ बताया कि कुमार कौरवों से लड़ने गए हैं।





युधिष्ठिर ने अब बृहन्नला का नाम लेकर जैसे ही कुछ कहना चाहा, राजा से न रहा गया। अपने हाथ का पासा युधिष्ठिर (कंक) के मुँह पर दे मारा। पासे की मार से युधिष्ठिर के मुख पर चोट लग गई और खून बहने लगा।





इतने में द्वारपाल ने आकर खबर दी कि राजकुमार उत्तर बृहन्नला के साथ द्वार पर खड़े हैं। राजा से भेंट करना चाहते हैं। सुनते ही विराट जल्दी से उठकर बोले—“आने दो! आने दो!!” कंक ने इशारे से द्वारपाल को कहा कि सिर्फ राजकुमार को लाओ, बृहन्नला को नहीं। युधिष्ठिर को भय था कि कहीं राजा के हाथों उनको जो चोट लगी है, उसे देखकर अर्जुन गुस्से में कोई गड़बड़ी न कर दे। यही सोच उन्होंने द्वारपाल को ऐसा आदेश दिया। राजकुमार उत्तर ने प्रवेश करके पहले अपने पिता को नमस्कार किया। फिर वह कंक को प्रणाम करना ही चाहता था कि उनके मुख से खून बहता देखकर चकित रह गया। उसे अर्जुन से मालूम हो चुका था कि कंक तो असल में युधिष्ठिर ही हैं।

→ राजा विराट ने यह बात मान ली। इसके कुछ समय बाद दुर्योधन के दूतों ने आकर युधिष्ठिर से कहा—“कुंती-पुत्र! महाराज दुर्योधन ने हमें आपके पास भेजा है। उनका कहना है कि उतावली के कारण प्रतिज्ञा पूरी होने से पहले अर्जुन पहचाने गए हैं। इसलिए शर्त के अनुसार आपको बारह बरस के लिए और वनवास करना होगा।”





इस पर युधिष्ठिर हँस पड़े और बोले—“दूतगण शीघ्र ही वापस जाकर दुर्योधन को कहो कि वह पितामह भीष्म और जानकारों से पूछकर इस बात का निश्चय करे कि अर्जुन जब प्रकट हुआ था, तब प्रतिज्ञा की अवधि पूरी हो चुकी थी या नहीं। मेरा यह दावा है कि तेरहवाँ बरस पूरा होने के बाद ही अर्जुन ने धनुष की टंकार की थी।”

प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न-1 राजकुमार उत्तर को अर्जुन से कंक के बारे में क्या मालूम हो चुका था?

उत्तर - राजकुमार उत्तर को अर्जुन से मालूम हो चुका था कि कंक तो असल में युधिष्ठिर ही हैं।

प्रश्न-2 राजकुमार उत्तर के बारे में राजा विराट को क्या भ्रम हुआ?

उत्तर - राजकुमार उत्तर के बारे में राजा विराट को भ्रम हुआ कि विख्यात कौरव-वीरों को उनके बेटे ने अकेले ही लड़कर जीत लिया!

प्रश्न-3 कंक के मुख से खून बहता देखकर राजकुमार उत्तर क्यों चकित रह गया?

उत्तर -
कंक के मुख से खून बहता देखकर राजकुमार उत्तर चकित रह गया क्योंकि उसे अर्जुन से मालूम हो चुका था कि कंक तो असल में युधिष्ठिर ही हैं।

प्रश्न-4 अंतःपुर में राजकुमार उत्तर को न पाकर जब राजा ने पूछताछ की तो उन्हें क्या पता चला?

उत्तर-
अंतःपुर में राजकुमार उत्तर को न पाकर राजा ने पूछताछ की तो स्त्रियों ने बड़े उत्साह के साथ बताया कि कुमार कौरवों से लड़ने गए हैं।

प्रश्न-5 राजा विराट को शोकातुर होते देखकर कंक ने उन्हें दिलासा देते हुए क्या कहा?

उत्तर- राजा को इस प्रकार शोकातुर होते देखकर कंक ने उन्हें दिलासा देते हुए कहा-
" आप राजकुमार की चिंता न करें। बृहन्नला सारथी बनकर उनके साथ गई हुई है।"